चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| The Tribune | 24-07-24 | 02 | 7-8 |

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE

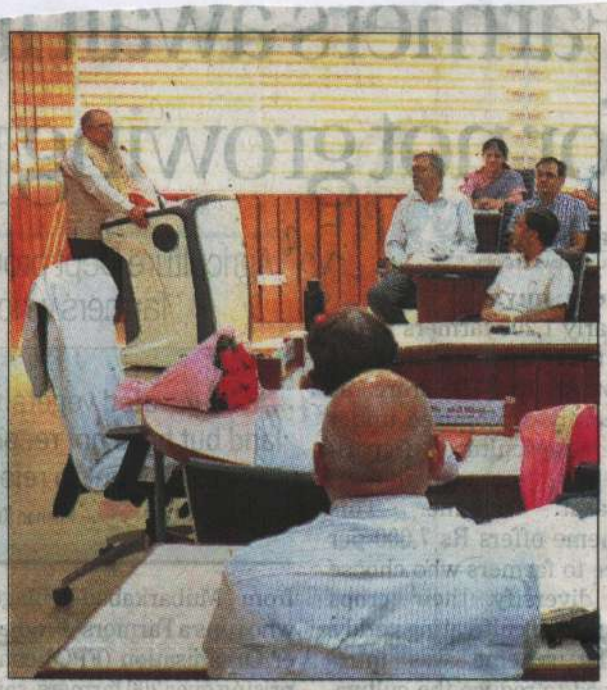

## REFRESHER COURSE ON RESEARCH

**Hisar:** A refresher course on 'research management' is being conducted at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU). The teaching faculty of the HAU and Lala Lajpat Rai University of Veterinary and Animal Sciences (LUVAS) are participating in this three-week refresher course being organised by the directorate of human resource management of the university. While inaugurating the course, Vice-Chancellor Professor BR Kamboj urged scientists to make every possible effort to prioritise research. He said research must be prioritised even for small landholding farmers to increase production at lesser costs. He urged all the participants to submit at least one project during the training in mutual coordination. He expressed hope regarding the refresher course playing an important role in providing agricultural scientists new techniques, and solutions.

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 24-07-24 | 03 | 2-6 |

**भास्कर खास** • एचएयू द्वारा गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर किए जा रहे हर संभव प्रयास : प्रो. काम्बोज

# एचएयू टीम ने 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे, कपास में गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के विवि कर रहे काम

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विवि के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा।

हकृवि में गुलाबी सुंडी से रोकथाम को लेकर आयोजित अधिकारियों की मीटिंग को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि कपास डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया। इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. शिवराज पुंडीर, डॉ. संदीप, डॉ. सोमवीर निम्बल, डॉ. मिनाक्षी जाटाण, डॉ. शिवानी मन्धानिया, डॉ. दीपक कम्बोज उपस्थित रहे।

## कीट प्रबंधन संबंधी सलाह

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुंडी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुंडी प्रौढ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से 10% फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 24-07-24 | 02 | 2-5 |

# सर्वे में गुलाबी सुंडी का प्रकोप मिला

## गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर किए जा रहे प्रयास : कुलपति

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया। मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में हकृवि टीम की तरफ से 40 गांव के सर्वे को भी रखा गया। इसमें कुछ जगह पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप मिला है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डा. करमल सिंह मलिक ने कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डा. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कार्यशाला में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए • पीआरओ

### कीट प्रबंधन संबंधी सलाह

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमान ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें।

### बीमारी संबंधी परामर्श

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कापर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

### महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं

वर्षा के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली तो निराई गुडाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की बिजाई करें। डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि-भूमि | 24-07-24 | 10 | 2-8 |

## अब तक सुंडी को लेकर 40 से अधिक गांवों में सर्वे कर चुकी है हकृवि की टीम

# गुलाबी सुंडी की रोकथाम को किए जा रहे हर संभव प्रयासः वीसी

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए।

उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा। डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया।

कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जौएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया। संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. शिवराज पुंडीर, डॉ. संदीप, डॉ. सोमवीर निम्बल, डॉ. मिनाक्षी जाटाण, डॉ. शिवानी मन्धानिया, डॉ. दीपक कम्बोज मौजूद रहे।

### कपास उत्पादक किसानों की राज्य स्तरीय बैठक कल, राजस्थान में कपास पर सुंडी कर रही हमला

हिसार। अखिल भारतीय किसान सभा ने 25 जुलाई को कपास उत्पादक किसानों की एक राज्य स्तरीय मीटिंग हिसार में बुलाई गई है जिसमें बीमारियों से खराब हुई कपास की फसल और आगामी आंदोलन पर चर्चा की जाएगी किसान सभा के जिला उपाध्यान दिनेश सिवाच ने बताया कि नरमा-कपास की फसल का उत्पादन हरियाणा में बड़े स्तर पर किया जाता है। पिछले काफी दिनों से हरियाणा के साथ लगते राजस्थान के हनुमानगढ और गंगानगर जिलों में कपास की फसल पर गुलाबी सुंडी के हमले की खबरें आ रही थीं। लेकिन अब हिसार और सिरसा के साथ-साथ फतेहाबाद के इलाके में भी नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी की शिकायतें आने लगी हैं। किसान सभा के प्रतिनिधिमंडल ने जिले के कई गांवों का दौरा किया और किसानों से बातचीत पर पता चला की नरमा कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू हो चुका है। ऐसी हालत में किसान सभा की मांग है कि पूरे कपास उत्पादक बेल्ट में कृषि विभाग के विशेषज्ञों की टीम दौरा करें और अलग-अलग गांव में सेमिनार करके किसानों को जागरूक किया जाए और पूरे इलाके में गांवों का क्लस्टर बनाकर प्रशिक्षण शिविर स्थापित किए जाए।

### कीट प्रबंधन संबंधी सलाह

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे खाने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ़ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा क्षतिग्रस्त मिलने पर कीटनाशकों का प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एसिटोपायरोफ्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

### महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं

बरसात के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली है तो अब निराई गुड़ाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की बीजाई करें। अगर डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

**बीमारी संबंधी परामर्शः** जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 24-07-24 | 02 | 7-8 |

# गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए कर रहे हर संभव प्रयास : कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

**गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा व जड़ गलन को लेकर एचएयू ने 40 गांवों में कराया सर्वे**

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा व जड़ गलन के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर वैज्ञानिक और कृषि विभाग के अधिकारी सजग हैं। जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसान वैज्ञानिकों की ओर की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें गुलाबी सुंडी के लिए निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुंडी प्रौढ़ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फलोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें। जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक ट्रिब्यून | 24-07-24 | 12 | 3-5 |

## हकृवि की टीम ने 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे

हिसार, 23 जुलाई (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए।

उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 24-07-24 | 05 | 2-5 |

## हकृवि द्वारा गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर किए जा रहे हर संभव प्रयास : प्रो. काम्बोज

## विश्वविद्यालय टीम द्वारा 40 से अधिक गांवों में किया गया सर्वे

हिसार, 23 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। प्री. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं। नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पल पल न्यूज | 23.07.2024 | --- | -- |

# गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए टीम ने 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे : प्रो.कंबोज

**पल पल न्यूज: हिसार, 23 जुलाई।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पांच बजे न्यूज | 23.07.2024 | --- | -- |

### गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर हर संभव प्रयास कर रहा है हकृवि : प्रो. काम्बोज

# हकृवि की टीम 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे

पांच बजे न्यूज

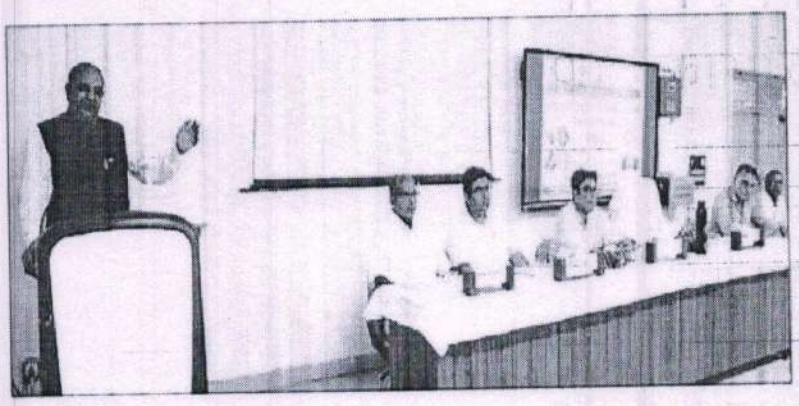

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में समायानिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी।

संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास में जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं।

**कीट प्रबंधन संबंधी सलाह :-**

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ़ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोपेन 50 जी/एल को 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

**बीमारी संबंधी पगमर्श :-**

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

**महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं :-**

बरसात के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली है तो अब निराई गुड़ाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की धीजाई करें। अगर डीएपी पहले डाल चुके है तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. शिवराज पुंडीर, डॉ. संदीप, डॉ. सोमवीर निम्बल, डॉ. मिनाक्षी जाटाण, डॉ. शिवानी मन्धानिया, डॉ. दीपक काम्बोज उपस्थित रहे।